Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

जयपुर चित्रकला: मुगल और राजपूत शैली का ऐतिहासिक सम्मिलन

Ghanshyam lal dhaker

NET- History

प्रस्तावना

भारत के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में राजस्थान ने एक विशिष्ट स्थान हासिल किया है। इसे पहले 'राजपूताना' कहा जाता था, जो कर्नल जेम्स टॉड द्वारा दिया गया नाम है। राजस्थान की ऐतिहासिक महत्ता सिर्फ युद्धों और शौर्य के कारण ही नहीं, बल्कि कला और संस्कृति में भी इसका योगदान अद्वितीय रहा है। यहाँ के चित्रकला के रूप में प्राचीन और आधुनिक दोनों कालों में समृद्ध परंपराएँ देखने को मिलती हैं। राजस्थान की चित्रकला अपनी विविधता और समृद्धि के लिए प्रसिद्ध है, जो भित्ति चित्रों, संग्रहालयों और विभिन्न सार्वजनिक एवं निजी स्थानों में उकेरी गई है। इन चित्रों ने न सिर्फ राजस्थान की संस्कृति और इतिहास को संरक्षित किया, बल्कि भारतीय चित्रकला के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।राजस्थानी चित्रकला की परंपरा बहुत पुरानी और समृद्ध रही है। इसे 16वीं सदी में विशेष पहचान मिली, जब इसने अपभ्रंश शैली, जैन शैली और पश्चिमी भारतीय शैली का संगम दिखाया। के. पीजाय सवाल ने इसे ग्यारहवीं शताब्दी के उदयादित्य के चित्रों से जोड़ा है, जो एलोरा में बनाए गए थे। इसके बाद, 8वीं शताब्दी के गुर्जर-प्रतिहार काल से लेकर 16वीं शताब्दी तक, राजपूताना में चित्रकला ने अपनी पूरी यात्रा तय की। इस दौरान, विभिन्न शैलियाँ जैसे अपभ्रंश शैली, जैन शैली और पश्चिमी भारतीय शैली का प्रभाव देखा गया, जिससे राजस्थानी चित्रकला को एक नया रूप मिला।सवाई जय सिंह के समय जयपुर में चित्रकला की एक नई दिशा देखने को मिली। उन्होंने न केवल कला को प्रोत्साहित किया, बल्कि इसे एक शास्त्रीय और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी जोड़ा। जयपुर चित्रकला की शैली में धार्मिक चित्रण, शाही दरबारों के दृश्य, और राजसी जीवन के विविध पहलुओं को दर्शाया गया। उनके संरक्षण और प्रोत्साहन से यह कला एक नई ऊंचाई पर पहुंची और जयपुर चित्रकला को भारतीय कला जगत में एक विशिष्ट स्थान मिला। इस दौरान चित्रकला न केवल कला रूप में विकसित हुई, बल्कि समाज पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा, जो उस समय के लोगों के जीवन, उनके विश्वासों और सांस्कृतिक परिवेश को चित्रित करता था।

राजस्थानी चित्रकला का यह सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण आज भी महत्व रखता है, और यह भारतीय कला की एक अमूल्य धरोहर के रूप में जानी जाती है।

ऐतिहासिक विश्लेषण और इतिहास लेखन

राजस्थानी चित्रकला का निर्माण मध्ययुगीन काल की एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर है। यह कला शैली इस दौरान हुए राजनीतिक उथल-पुथल और सामाजिक परिवर्तनों से गहरे रूप में प्रभावित रही। 15वीं शताब्दी से लेकर 19वीं शताब्दी तक का समय राजस्थानी चित्रकला के विकास और विस्तार के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस अवधि में इस कला के विभिन्न रूपों और शैलियों का प्रादुर्भाव हुआ, जो भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।राजस्थानी चित्रकला पर कई विद्वानों ने व्यापक शोध और

विश्लेषण किया है, जिनमें प्रमुख नामों में ओ. डब्ल्यू. जी. आर्कर (Indian Miniatures, London 1960), बासिल ग्रे (Rajput Painting, Oxford 1951), पर्सी ब्राउन (Indian Painting, Oxford 1947), मोती चन्द्र (Mewar Painting, Bundi Painting, New Delhi 1959), ओ.सी. गांगूली (Masterpieces of Rajput Painting), कार्ल. ले. खंडेलवाल (The Development of Style in Indian Painting, Madras), राय कृष्णदास (Mughal Miniatures, New Delhi 1955), और रोजा सीमीनो, डॉ. भगवतीलाल, रामनाथ आदि विद्वान शामिल हैं। इन सभी ने राजपूत चित्रकला की ऐतिहासिक समीक्षा की और इस कला के विकास में अहम योगदान दिया है।

राजस्थानी चित्रकला के प्रमुख केंद्रों में जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, बूंदी-कोटा, जैसलमेर, उदयपुर और नाथद्वार का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। इन क्षेत्रों में राजकीय और निजी संग्रहालयों के साथ-साथ कला प्रेमियों के कला भंडारों में भी समृद्ध चित्रों का संग्रह मौजूद है।

राजपूताना की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव इस चित्रकला पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह चित्रकला न केवल उस समय के शाही दरबारों और राजसी जीवन को चित्रित करती है, बल्कि आम जनता के जीवन और उनकी भावनाओं को भी बड़े नजदीकी से दर्शाती है। इस कला का उद्देश्य केवल भव्यता और ऐश्वर्य को प्रस्तुत करना नहीं था, बल्कि यह उस समय की समाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक भावनाओं को भी जीवित करने का एक सशक्त माध्यम था।

राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएँ जैसे रंगों का सटीक प्रयोग, जीवन के विभिन्न पहलुओं की गहरी अभिव्यक्ति, और नायक-नायिका के चित्रण में सूक्ष्म भावनाओं का प्रभाव दर्शाता है कि यहाँ की कला सीधे आम आदमी के दिल से जुड़ी हुई थी। इस शैली में जीवन के सत्य, कोमलता, और आत्मानुशासन की गहरी समझ प्रस्तुत की जाती है।

जयपुर शैली, जो राजस्थान की चित्रकला का एक प्रमुख अंग मानी जाती है, ने न केवल शाही परिवारों के चित्रण में अपितु सामान्य जनजीवन की विविधताओं में भी सुंदरता और संतुलन का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। इस शैली में रंगों का इस्तेमाल, भावनाओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति और शाही दरबारों के दृश्य का चित्रण, सभी दर्शाते हैं कि यह कला अपनी सरलता और स्पष्टता के कारण विशिष्ट थी। जयपुर शैली में राजा-महाराजाओं के पोट्रेट चित्रों, जैसे दरबारी चित्रकार साहिब राम द्वारा तैयार किए गए, दर्शकों को न केवल ऐतिहासिक दृष्टिकोण से जुड़ा करते हैं, बल्कि उनके शाही जीवन की भव्यता और सामरिक शक्ति को भी व्यक्त करते हैं।राजस्थानी चित्रकला के इस विकास में मुग़ल चित्रकला का भी एक महत्वपूर्ण योगदान था, विशेष रूप से जयपुर शैली में मुग़ल कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है।

राजस्थानी चित्रकला का विभाजन और वर्गीकरण

राजस्थानी चित्रकला का विकास विभिन्न कलाकारों के योगदान से हुआ है। यह कला राजस्थान के प्राचीन नगरों, राजधनियों और धार्मिक स्थलों पर पल्लवित हुई, जहां चित्रकला ने समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित किया। राजस्थानी चित्रकला का जन्म धर्मपीठों, लोककलात्मक मिथकों, और राजाओं, सामंतों, जागीदारों, नगर प्रमुखों तथा कलाकारों के योगदान से हुआ। इन योगदानों के आधार पर राजस्थानी चित्रकला को विभिन्न स्कूलों और शैलियों में वर्गीकृत किया गया है।

राजस्थानी चित्रकला के प्रमुख स्कूल

1. **मेवाड़ स्कूल** - इस शैली में चावड़, उदयपुर, देवगढ़, नाथद्वार आदि प्रमुख स्थानों की शैलियाँ और उपशैलियाँ सम्मिलित हैं।

2. **मारवाड़ स्कूल** - जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, किशनगढ़, पाली, नागौर और धणेराव जैसे स्थानों की शैलियाँ और उपशैलियाँ इस वर्गीकरण में आती हैं।
3. **ढुंढाड़ स्कूल** - आमेर, जयपुर, शेखावटी, अलवर, उणियार, करौली और झिलाए जैसी शैलियाँ इस स्कूल से जुड़ी हैं।
4. **हाड़ौती स्कूल** - बूंदी, कोटा, झालावाड़ आदि क्षेत्रों की शैलियाँ और उपशैलियाँ इस स्कूल में शामिल होती हैं।

इन शैलियों का विभाजन अपने आप में स्वतंत्र और विशिष्ट है, जिससे प्रत्येक स्कूल की कला शैली की अपनी पहचान बनी हुई है।

जयपुर शैली

जयपुर शैली, जिसे कछवाहा शैली के नाम से भी जाना जाता है, का इतिहास विशेष रूप से समृद्ध और विविध है। जयपुर के स्थापत्य और चित्रकला में मुग़ल प्रभाव भी देखने को मिलता है, खासकर उस समय के शासकों द्वारा चित्रकला को संरक्षण प्रदान करने के कारण।
जयपुर शैली की शुरुआत सवाई जयसिंह के शासनकाल में हुई, जिन्होंने कला, विज्ञान और स्थापत्य में अद्भुत योगदान दिया। उनकी कड़ी देखरेख में चित्रकला ने एक नई दिशा ली, जहां पारंपरिक राजपूत शैली में मुग़ल तत्वों का समावेश हुआ।

जयपुर शैली के विशेष गुण

जयपुर शैली में चित्रित नारी पात्रों का रूप अत्यधिक सजीव और आकर्षक होता था। नारी के चित्रों में उनकी आंखें बड़ी, चेहरा अंडाकार, नाक सुडौल और शरीर के रूप में लचक दिखाई जाती थी। इसके अलावा, उनके वस्त्रों में चोली, कुर्ता, दुपट्टा, लहंगा और तिलक जैसी विशेषताएँ नज़र आती थीं। पुरुषों के चित्रों में मुछें और लम्बी केश राशि का प्रयोग, साथ ही पगड़ी, कुर्ता, चोगा और अंगरसी का चित्रण प्रमुख था।
जयपुर शैली की विशेषता यह है कि इसमें भव्यता और सूक्ष्मता का अद्भुत मिश्रण होता है। कलाकारों ने न केवल धार्मिक और ऐतिहासिक विषयों का चित्रण किया, बल्कि प्रकृति, उद्यानों, पक्षियों, जानवरों और युद्ध दृश्यों का भी सजीव चित्रण किया।
इस शैली के चित्रों में रागमाला, कृष्ण लीला, पौराणिक आख्यान, नायिका भेद जैसी शैलियाँ प्रमुख थीं। 17वीं और 18वीं शताब्दी में चित्रित रागमाला के चित्र जयपुर संग्रहालय में उपलब्ध हैं, जो इस शैली के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।
जयपुर शैली की चित्रकला ने समय के साथ न केवल राजपूत कला को जीवित रखा, बल्कि उसे मुग़ल शैली के तत्वों के साथ निखारते हुए एक नई पहचान भी दी।
सवाई प्रताप सिंह (1779-1803) से लेकर राम सिंह (1835-1880) तक के काल में मुग़ल बादशाहों के चित्रों की एक बड़ी संख्या बनी। हुमायूं का चित्र इस प्रकार से चित्रित किया गया है, जिसमें वह अपनी उंगली पर बाज़ को बैठाए हुए हैं, और चित्र के पीछे किले का चित्रण किया गया है। यह चित्र अवध चित्रशैली की परंपरा का उदाहरण है। एक अन्य चित्र में जहांगीर को कुर्सी पर बैठे हुए दिखाया गया है, और एक और चित्र में कुर्सी के ऊपर छत्र भी दर्शाया गया है। इसी प्रकार शाह आलम द्वितीय (1759-1805) और मोहम्मद अकबर द्वितीय (1806-1837) के चित्र भी बनाए गए हैं। एक चित्र में अकबर को युद्ध दृश्य में दिखाया गया है, जिसमें मुग़ल सेना साधुओं से लड़ रही है। वर्ष 1945 में प्राप्त ग्यारह चित्रों में, जो जयपुर शैली पर आधारित हैं, अंग्रेजी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

रज्मनामा के चित्रों में अर्जुन को द्रोणाचार्य को प्रणाम करते हुए दिखाया गया है, और दोनों ओर सेनाएं खड़ी हैं। राधा-कृष्ण का रथ भी चित्रित किया गया है। अन्य चित्रों में द्रौपदी स्वयंवर और अर्जुन द्वारा मछली वध का दृश्य भी है। एक चित्र में फकीर के आश्रम का चित्रण किया गया है। इन चित्रों में आकृतियां लम्बी और संक्षिप्त रूप में बनाई गई हैं, जो प्रोविंशियल मुग़ल शैली का प्रतिनिधित्व करती हैं।

इसके अतिरिक्त, कृष्ण कथा और जैन परंपरा के समन्वय के प्रमुख चित्र भी बने हैं, जिसमें कई चित्रों में कृष्ण को नेमिनाथ के साथ होली खेलते हुए दर्शाया गया है। इन चित्रों पर जैन प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, हालांकि जयपुर शैली और मेवाड़ शैली का प्रभाव भी इनमें दिखाई देता है। डॉ. आनंद कुमार ने इन चित्रों को जयपुर कला शैली से संबंधित माना है, जबकि वास्तविकता यह है कि इन चित्रों का वर्णन, रंग संयोजन और रूप-रचनात्मकता मेवाड़ शैली के अधिक निकट हैं।

उपसंहार

भारतीय चित्रकला की अत्यधिक मूल्यवान और प्रमुख शैलियों में अजंता और एलोरा की गुफाओं में उकेरी गई चित्रकला का विशेष स्थान है। इन गुफाओं की चित्रकला न केवल भारतीय कला की शुरुआत और विकास का प्रतीक मानी जाती है, बल्कि यह धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों से भी गहरे रूप से जुड़ी हुई है। इन शैलियों से प्रेरित होकर, राजस्थानी चित्रकला ने भारतीय कला जगत में अपनी अनूठी पहचान बनाई। राजस्थान के विभिन्न राजपूताना राज्यों में विकसित होने वाली शैलियों और उपशैलियों ने भारतीय चित्रकला की परंपरा को नई दिशा दी और उसे और अधिक समृद्ध किया।

राजस्थानी चित्रकला ने विशेष रूप से जयपुर शैली में मुग़ल प्रभाव और स्वतंत्र भारतीय परंपराओं का संयोजन प्रस्तुत किया। जयपुर शैली में चित्रित राधा-कृष्ण की छवियां, जिनमें गुलाबी सौंदर्य की परंपरा और मुग़ल चित्रकला की सूक्ष्मताओं का मेल है, कला के अद्वितीय उदाहरण हैं। यह चित्रकला न केवल अपनी कलात्मक विविधता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यह धार्मिक और सांस्कृतिक संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का एक माध्यम भी है। कुमार स्वामी द्वारा इसे भारतीय चित्रकला का उत्कृष्ट रूप और विश्व की महान शैलियों में स्थान मिलने योग्य माना गया है।

इस शैली में प्रत्येक चित्र में सौंदर्य, भावनात्मक गहराई और विस्तृत विचारधारा का संगम दिखता है। राजस्थानी चित्रकला ने भारतीय कला के अन्य रूपों से भी प्रेरणा ली है और इसके साथ ही उसे समृद्ध किया है। इसकी विशेषताएं जैसे कि रंगों का चयन, रचनाओं की सजीवता, और भावनाओं की अभिव्यक्ति, इसे एक ऐसी अद्भुत शैली बनाती हैं जो न केवल भारतीय बल्कि वैश्विक कला जगत में अपनी एक अलग पहचान स्थापित करती है।

इस प्रकार, राजस्थानी चित्रकला ने भारतीय चित्रकला की परंपराओं को न केवल आगे बढ़ाया, बल्कि यह स्वतंत्रता, भव्यता और सौंदर्य की मिसाल बन गई। यह शैली एक ऐसी धरोहर के रूप में जीवित रही है जो भारतीय संस्कृति और कला की अमूल्य धरोहर के रूप में विश्व स्तर पर सम्मानित की जाती है। इसकी कलात्मक विशेषताएं और सृजनात्मकता को समय के साथ और अधिक सराहा गया है, और यह कला रूप भविष्य में भी अपनी अद्वितीयता बनाए रखेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. जयसिंह नीरज, *राजस्थानी चित्रकला और हिन्दी कृष्णकाव्य*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1976, पृ. 46-47
2. कर्नल जेम्स टॉड, *अनॉल्स एंड एंटीक्विटीज़ ऑपफ राजस्थान*, पूर्वोक्त पृ. 32
3. सुरेन्द्र सिंह चौहान, *राजस्थानी चित्रकला*, पूर्वोक्त पृ. 48-49

4. नवीन खन्ना, *इंडियन मैथडोलोजी थ्रू द आर्ट एंड मिनीएचरस्*, अरावली बुक्स इंटरनैशनल प्रा.ली., न्यू दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2013, पृ. 102-103
5. मरूभारती अगस्त 1954, *जन्माष्टमी-सं. 2011 वोल्यूम 1-3, 1953-55*, संपादकः स. अगरचन्द नाहटा, झाबरलाल शर्मा, कन्हैयालाल सहल, डॉ. सुधीन्द्र, आचार्य नित्यानंद, पृ. 82
6. कर्नल जेम्स टॉड, *अनॉल्स एंड एंटीक्विटीज़ ऑफ्फ राजस्थान*, एम.एन.पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1978, पृ. 1-2
7. रोजा मारिया सिमीनो, *वॉल पेंटिंग्स ऑफ्फ राजस्थान (आम्बेर एंड जयपुर)*, आर्यन बुक्स इंटरनैशनल, न्यू दिल्ली, 2001, पृ. 1-2
8. रायबहादुर, गौरीशंकर हीराचन्द औझा, *राजपूताने का प्राचीन इतिहास*, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, तृतीय संस्करण, 2009, पृ. 66-67
9. वहीं, पृ. 67
10. वहीं, पृ. 83-84
11. डॉ. जयसिंह नीरज, डा. बी.एल. शर्मा (सं.), *राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 1989, पृ. 84-85
12. वहीं, पृ. 85-87
13. आनन्द कुमार स्वामी, *राजपूत पेंटिंग*, फारवर्ड बाई कार्ल जे. खण्डेलवाल, वॉल्यूम 3, पब्लिकेशन मातीलाल बनारसीदास, दिल्ली, वाराणसी, पटना, प्रथम संस्करण, 1961, पृ. स्टप्प्ब्
14. सुरेन्द्र सिंह चौहान, *राजस्थानी चित्रकला*, राहुल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1994, पृ. 45
15. वहीं, पृ. 35
16. सुरेन्द्र सिंह चौहान, *राजस्थानी चित्रकला*, पूर्वोक्त पृ. 48
17. वहीं, पृ. 4-5
18. वहीं, पृ. 104-105
19. नवीन खन्ना, *उपरोक्त*, पृ. 104-105
20. सुरेन्द्र सिंह चौहान, *राजस्थानी चित्रकला*, पूर्वोक्त पृ. 49-50
21. वहीं, पृ. 50
22. ममता चतुर्वेदी, *मिर्थ ऑफ्फ जयपुर वॉल पेंटिंग्स*, पब्लिकेशन सेम, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2000, पृ. 51-52